P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-3* June- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

# नरेन्द्र कोहली की कृष्ण–कथा : एक अवलोकन

**पूनम काजल**
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,
हिन्दी विभाग,
हिन्दू कन्या महाविद्यालय,
जीन्द

**सारांश**

'महाभारत' हमारा काव्य भी है, इतिहास भी और अध्यात्म भी। यह एक ऐसी विशाल कृति है, जो भारतीय जीवन, चिन्तन, दर्शन तथा व्यवहार को मूर्तिमंत रूप में प्रस्तुत करती है। महाभारत की कथा भारतीय चिन्तन और भारतीय संस्कृति की अमूल्य थाती है। नरेन्द्र कोहली ने इसे ही अपने कृष्ण–कथात्मक उपन्यास 'महासमर' का आधार बनाया है। उनके द्वारा कृष्ण–कथा को औपन्यासिक रूप में पुनः सृजन करने की शृंखला में बंधन, अधिकार, कर्म, धर्म, अंतराल, प्रच्छन्न, प्रत्यक्ष और निर्बन्ध उपन्यासों की भूमिका है, जिनका समग्र संकलन 'महासमर' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। प्राचीन कथा के सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक मूल्यों का आधुनिक सन्दर्भों में विश्लेषण इस कृति की विशेषता है।

**मुख्य शब्द :** मूतिमंत, शाश्वतता, संत्रास, मिथकीय, वर्णसंकर।

**प्रस्तावना**

'महासमर' का आधार महाभारत है, किन्तु लेखक इसे एक नई दृष्टि से, एक नए रूप में प्रस्तुत करते हैं। कोहली ने पुरानी कथा की बाह्य कृति को बरकरार रखते हुए नए रचना–संसार का निर्माण किया है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर पात्रों के मानस की पुनर्रचना की है और अनेक नए कथा–प्रसंगों का निर्माण भी किया है। पौराणिक घटनाओं का यह तर्कसंगत, बुद्धिवादी, समाजशास्त्रीय, राजनीतिक और ऐतिहासिक विश्लेषण बहुत आधुनिक लगता है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

कोहली यह नहीं मानते कि महाकाल की यात्रा खंड़ों में विभाजित है, इसलिए जो घटनाएँ घटित हो चुकीं, उनसे अब हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। उनकी मान्यता है कि न तो प्रकृति के नियम बदलते हैं, न मनुष्य का मनोविज्ञान। जिन परिस्थितियों के फलस्वरूप 'महाभारत' जैसा भीषण युद्ध हुआ, वे परिस्थितियाँ आज भी ज्यों–की–त्यों बनी हुई हैं। महाभारत–युग की भाँति ही आज भी हमें अपने चारों ओर अधर्म, अन्याय और अत्याचार फलते–फूलते दिखाई देते हैं। महाभारत जैसे भीषण युद्ध की भाँति ही इस युग में भी दो महाविनाशकारी विश्व–युद्ध हो चुके हैं। इन युद्धों ने मानवीय आस्था को इतनी बुरी तरह से झकझोर कर रख दिया है कि मनुष्य के जीवन में प्रेम, दया और सहानुभूति के स्थान पर अनास्था, नैराश्य और व्यर्थता–बोध व्याप्त होता जा रहा है। इसके अतिरिक्त वैयक्तिक स्वार्थपूर्ति, राजनैतिक दलों की गुटबन्दी एवं दलीय स्वार्थान्धता के रूप में राजनैतिक दलों के विघटन की स्थिति भी दिखाई दे रही है। व्यक्ति–केन्द्रता के कारण पारिवारिक, आर्थिक एवं राजनैतिक संस्थाओं में सामाजिकता की भावना का अभाव दिखाई दे रहा है तथा सामाजिक मूल्यों का ह्रास एवं नवीन मूल्य–निर्माण की छटपटाहट भी दृष्टिगोचर हो रही है।

'महासमर' के पात्रों को यदि हम भारत की वर्तमान व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास करें, तो इसकी कथा को कुछ नए आयाम प्राप्त हो सकते हैं। इसके पात्र द्वापर युग में जीने वाले प्राचीन पात्र नहीं है, अपितु अपनी शाश्वतता में वे आज भी उतने ही नवीन हैं। पौराणिक पात्रों को आधार बना, उनके आदर्श प्रस्तुत कर आधुनिक मानव की व्यथा को ही प्रस्तुत किया गया है। सच तो यह है कि नैतिक मूल्यों का पतन, स्त्री की दारूण स्थिति, राजनैतिक शोषण, सांस्कृतिक विघटन आदि वर्तमान युगीन समस्याओं को पूरी व्यापकता के साथ दर्शाया गया है।

आधुनिक युग में मूल्यों के टूटने की प्रक्रिया जारी है, जिस कारण समाज में मूल्यहीनता की स्थिति पैदा हो रही है। नरेन्द्र कोहली ने अपनी कृष्ण–कथा में मनुष्य की नैतिकता से बढ़ती दूरी का बखूबी उद्घाटन किया है।

सत्यवती, धृतराष्ट्र एवं दुर्योधन के माध्यम से आधुनिक मनुष्यों में बढ़ती स्वार्थ की भावना को उजागर किया गया है। जीवन के संघर्षों में उलझे रहने के कारण आधुनिक मानव शान्तनु, भीष्म, पाण्डु और अम्बा की भाँति मानसिक तनाव के दौर से गुज़र रहा है। आज का मानव भीष्म की भाँति वेदना एवं संत्रास को ढोता दिखाई देता है। आज भी धृतराष्ट्र एवं दुर्योधन जैसे स्वार्थी लोगों की व्यक्ति केन्द्रता के कारण पारिवारिक, आर्थिक एवं राजनैतिक संस्थाओं में सामाजिकता की भावना का अभाव दिखाई दे रहा है। इस सन्दर्भ में कोहली 'निर्बन्ध' उपन्यास के आवरण पृष्ठ पर लिखते हैं – "वह उस संसार में रहता है, जिसमें चारों ओर लोभ, मोह, सत्ता और स्वार्थ की शक्तियाँ संघर्षरत हैं।"[1]

वर्तमान युग के लेखक होने के कारण कोहली के उपन्यासों में वर्तमान युग की नैतिक चेतना और आदर्श के अनुकूल यंत्र–तंत्र परिवर्तन एवं नवीन उद्‌भावनाएँ होनी स्वाभाविक थीं। हम कह सकते हैं कि इन उपन्यासों में उन्होंने पुरानी प्रामाणिकता को बनाए रख कर नई व्याख्याओं के द्वारा उसकी सर्वकालीनता को आधुनिक सन्दर्भों में उजागर करने का दुरुह कार्य किया है। अपनी आवश्यकतानुसार उन्होंने कथा में कल्पना का समुचित समावेश किया है और अपने समकालीन परिवेश में घटित अनेक घटनाओं का कृष्ण–कथा की घटनाओं के साथ तालमेल बैठाया है। इस प्रकार इतिहास को आधार बनाकर उन्होंने मानव–जीवन तथा तद्‌युगीन सामाजिक विधान के गतिशील व जीवन्त चित्रों को प्रस्तुत करके उनके द्वारा न केवल ऐतिहासिक जिज्ञासा को शान्त किया है, अपितु आधुनिक जीवन की समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत किए हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि वर्ग–संघर्ष अपने देश में एक सनातन रोग है। अत्याचार, अन्याय और शोषण के कीटाणु आदिम हैं तथाा उनके विरुद्ध संघर्ष भी आदिम है। कौरवों–पाण्डवों का संघर्ष अपने समग्र अर्थों में शोषकों के विरुद्ध शोषितों का आधुनिक स्वातन्त्रय संघर्ष है। वस्तुतः कौरवों–पाण्डवों के माध्यम से आधुनिक राजनीति के दो ध्रुव बिम्बित किए गए हैं। कोहली ने 'बंधन' उपन्यास में सत्यवती के माध्यम से शोषण की इस प्रवृत्ति का उद्‌घाटन किया है – "..... बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है..... मानव–समाज में भी अधिकांशतः मत्स्य–न्याय ही चल रहा है..... अपने से छोटों को खाकर ही लोग बड़े बनते हैं शायद।"[3] यह भी सत्य है कि नरेन्द्र कोहली ने महाभारत की कथा को आज से जोड़ने का कोई अलग प्रयास नहीं किया है, परन्तु जैसा कि उनका मानना है–'मनुष्य की प्रकृति वही है, केवल काल बदलता है'–इस आधार पर लगता है जैसे उनके सभी पात्र आज की ही बातें कर रहे हैं। महाभारत तो राजनीतिक उठा–पटक का अखाड़ा है, इसलिए उसमें हमारे देश की वर्तमान राजनीतिक विसंगतियाँ भी अपने सम्पूर्ण रूप में दृष्टिगोचर होती हैं।

अत्याचार एक शाश्वत सत्य है, क्योंकि जब भी जिसके पास शारीरिक शक्ति, क्रूर मस्तिष्क, अमानवीय मूल्य और अमर्यादित धन हो, वह पहले तो सत्ता हस्तगत कर लेता है और फिर लोगों पर अत्याचार करने लगता है। धृतराष्ट्र के माध्यम से वस्तुतः आज के सत्तालोलुप, मदान्ध, स्वार्थी जननेताओं को प्रस्तुत किया गया है जो सत्ता हाथ में आते ही तानाशाह बन बैठते हैं। निज स्वार्थ के लिए देश के हितचिंतक, कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति के स्थान पर स्वपुत्र को राजसिंहासन पर अनैतिक रूप से आसीन करवाना वास्तव में गहरी राजनैतिक चाल है। धृतराष्ट्र के माध्यम से वस्तुतः आज के मदान्ध, स्वार्थी और सत्तालोलुप राजनेताओं को प्रस्तुत किया गया है जो सत्ता हाथ में आते ही तानाशाह बन बैठते हैं। धृतराष्ट्र की इस तानाशाही प्रवृत्ति के संदर्भ में उपन्यासकार द्रोण के मुख से विदुर के समक्ष कहलवाते हैं ".....आप कदाचित् नहीं जानते कि राजनीति में 'अधिकार' से अधिक महत्व 'आधिपत्य' का होता है। शासन, अधिकार से नहीं, आधिपत्य से संचालित होता है। किसी का अधिकार विवादास्पद हो सकता है, किन्तु आधिपत्य स्वयं अपने आप में भी प्रमाण है, स्वयं सिद्ध है।"[4]

यहाँ पर लेखक एक बात की ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं कि जितना अन्याय बढ़ेगा, अत्याचार बढ़ेगा, उतना ही उसके विरुद्ध लड़ने वाले का महत्त्व भी बढ़ जाएगा। यदि हम महाभारत–युग पर दृष्टिपात करें, तो हम स्वतः ही समझ जाएँगे कि उस युग में धर्म का क्षरण होने लगा था। राजा और प्रजा सत्य को कहने में सकुचाने लगे थे। धृतराष्ट्र की राजसभा में द्रौपदी की दुर्दशा होने पर प्रजा तो क्या, भीष्म और द्रोण जैसे वयोवृद्ध नीतिज्ञ भी कुछ न बोले, क्योंकि वे कुरु हस्तिनापुर राज्य से प्राप्त अर्थ के दास बन चुके थे। वे अन्याय का विरोध करने में असमर्थ हो गए थे। श्रीकृष्ण उस वर्णसंकर संस्कृति, अन्याय का विरोध करने के लिए अवतरित हुए थे।

"युद्ध निन्दित और क्रूर कर्म है, किन्तु उसका दायित्व किस पर होना चाहिए? इस पर जो अनीतियों का जाल बिछा कर प्रतिकार को आमन्त्रण देता है या उस पर, जो जाल को छिन्न–भिन्न कर देने के लिए आतुर है? पाण्डवों को निर्वासित करके एक प्रकार की शान्ति की स्थापना तो दुर्योधन ने भी की थी, तो क्या युधिष्ठिर महाराज को इस शांति को भंग नहीं करना चाहिए था।[2] कुछ इसी प्रकार के प्रश्नों के उत्तर कोहली के कृष्ण–कथानक उपन्यासों में हैं। युद्ध की समस्या मनुष्य की शाश्वत समस्या है, यही सब समस्याओं की जड़ है। महाभारत की कथा का आलम्बन लेकर कोहली ने इस समस्या को उठाया है। लेखक इस बात की ओर भी पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं कि अनीति पर आधारित शान्ति अप्रत्यक्ष रूप से युद्ध का अनिवार्य कारण होती है। जब अनीति से दुर्बलों का धन अपहृत कर कोष संचित किए जाते हों और किसी को उसके विरुद्ध बोलने का भी अधिकार प्राप्त न हो, तो उसका परिणाम महाभारत जैसे युद्ध के रूप में हमारे सामने होगा। सत्ता हस्तगत कर सुख का विभाजन अनीति पर आधारित हो, समाज के सूत्रधार अन्यायी एवं अत्याचारी हों, शासन का एकमात्र आधार शस्त्रबल हो, अन्याय सहते–सहते मनुष्य का मन कुंठित हो गया हो, तो वहाँ ऊपर–ऊपर ही शान्ति दिखाई देती है, अन्तर में एक चिंगारी स्थित होती है, जो किसी दिन युद्ध की ज्वाला बन फूट पड़ती है। आज भी यह

समस्या उतनी ही ज्वलंत व विचारणीय है, जितनी कि महाभारत–युग में थी। यहाँ पर कोहली एक तथ्य की ओर भी हमारा ध्यान आकर्षिक करना चाहते हैं कि समाज कभी भी युद्ध नहीं चाहता, केवल धृतराष्ट्र, दुर्योधन और कर्ण जैसे स्वार्थी और सत्तालोलुप राजनेता ही युद्ध के लिए उत्तरदायी हैं। शांतिप्रिय मनुष्य युद्ध से पूर्व युधिष्ठिर की भाँति सदैव उससे मुक्ति पाने एवं शान्ति–स्थापना का उपाय खोजते हैं, परन्तु न चाहते हुए भी उन्हें युद्ध में प्रवृत्त होना पड़ता है। युद्ध का प्रतिकार करने के लिए कोहली बार–बार युधिष्ठिर के मुख से 'आनृशंसता' शब्द का प्रयोग करवाते हैं। युद्ध और शांति के संदर्भ में उपन्यासकार के विचारों को वाणी प्रदान करते हुए कृष्ण का कथन है – "मैं आर्यावर्त्त में प्रेम, सौहार्द्र और शांति में वृद्धि करना चाहता हूँ। आप क्या नहीं जानते कि सदा युद्ध में उलझे अथवा युद्ध की तैयारी में लगे राजा, प्रजा को कभी सुखी नहीं रख सकते? प्रजा की सुख–समृद्धि के लिए शांति अनिवार्य है .....।"

**निष्कर्ष**

लेखक की मान्यतानुसार मानव का मानव के लिए प्रेम संसार की उन्नति के लिए आवश्यक है। तप, त्याग, करुणा, क्षमा आदि व्यक्ति के धर्म हैं, परन्तु जहाँ मानवता अथवा समष्टिहित का प्रश्न आता है, वहाँ इन्हें विस्मृत करना पड़ता है, क्योंकि ये सभी साधन मात्र हैं, साध्य है–मानवता। मानवता की रक्षा के लिए भीम की भाँति मनोबल के साथ–साथ शारीरिक बल भी आवश्यक है, क्योंकि दुर्योधन, कर्ण और दुःशासन जैसे पतित जनों की कुवृत्तियों के समक्ष मनोबल व तप, त्यागादि निस्तेज हो जाते हैं। इसी कारण संघर्ष के नेता कृष्ण अर्जुन को उपदेश द्वारा युद्ध की ओर प्रवृत्त करते हैं। यह भी सत्य है कि मनुष्य का कल्याण तभी होगा, जब मनुष्य का ज्ञान समता पर आधारित होगा, मानव–मानव में परस्पर दृढ़ विश्वास होगा। तब मनुष्य का इतिहास दग्ध, मलिन पृष्ठों के रूप में नहीं, सुधामय कोष के रूप में होगा। उपन्यासकार कोहली लिखते हैं – "हम सारे विश्व की मंगल–कामना करते हैं। सबके स्वस्थ, नीरोग और दीर्घ जीवन के लिए प्रार्थना करते हैं।"[7]

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *नरेन्द्र कोहली, निर्बन्ध, महासमर –8 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2000 आवरण पृष्ठ*
2. *वही, बन्धन, महासमर – 1 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2000 पृ0 44*
3. *वही, धर्म, महासमर – 4 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 1994 पृ0 35*
4. *रामधारी सिंह दिनकर, कुरुक्षेत्र, उदयांचल प्रकाशन, पटना 1951 पृ0 2*
5. *नरेन्द्र कोहली, कर्म, महासमर – 3 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 1992 पृ0 213*
6. *वही, अंतराल, महासमर – 5 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2000 पृ0 52*